"वेदांत दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

सुभाष मीना
सहायक आचार्य
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर

सारांश

वेदांत दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रस्तुत शोध में वेदान्त दर्शन में निहित मानवतावादी एक प्राचीन परंपरा, उपनिषदों में मानवतावाद, भागवद् गीता में मानववाद, दार्शनिक संप्रदायों में मानववाद, पाश्चात्य मानववाद से तुलना, शिक्षा का मानवीकरण, मानववाद के आयाम के अंतर्गत पुनर्जागरण मानववाद, एकेडमिक मानववाद, कैथोलिक मानवाद, धार्मिक मानववाद, मार्क्सवादी मनववाद, प्रकृतिवादी मानववाद का विश्लेषण वेदान्त दर्शन में नीहित मानवतावादी दृष्टिकोण के संदर्भ में अध्ययन किया गया तथा मानवतावाद के महत्व के अंतर्गत अध्ययन करते हुए पाया गया कि मनुष्य के लिए मानवता आवश्यक है एवं बाल केंद्रित शिक्षा, मानववादी दर्शन पर आधारित है। मानवीय शिक्षा में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है तथा मानववादी दृष्टिकोण अनुशासन विकसित करता है तथा मानववादी दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य समाज का प्रतिनिधि है । मानववाद सामाजिक न्याय का दर्पण है। मानववादी शैक्षिक संकल्पना का अध्ययन के अंतर्गत भारत में मानववादी परंपरा, प्राणी ब्रह्म का दर्शन है का अध्ययन किया गया है । वेदान्त और मानववाद का विश्लेषणात्मक अध्ययन का यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि मानववाद का लक्ष्य मानव कल्याण है, तथा सम्पूर्ण विश्व एक सत्ता है, ईश्वर व्यष्टियों की समीष्ट है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानवीय दृष्टिकोण भारत की पुरातन संस्कृति का एक आवश्यक अंग है।

प्रस्तावना

वेदांत में मानव आत्मा के दो पहलू माने जाते हैं- जीवात्मा और परमात्मा। जीव विज्ञानी उसके दुख और बंधन,

आज्ञान के कारण है। आत्मा का ज्ञान होने पर यह अज्ञान और उसके दुख और बंधन भी नष्ट हो जाते हैं। परमात्मा एक है। भारतीय विचारकों ने अनुभव और चिंतन से यह निश्चित किया कि एकात्मता का दृष्टिकोण ही मानव की स्वाभाविक स्थिति है और जब किसी कारण से यह एकात्मता नहीं रह पाती, तब-तब मनुष्य अलगाव राग-द्वेष, द्वन्द और संघर्ष का शिकार होता है और उसे कष्ट मिलते हैं चूंकि एकात्मकता का विषय सब जगह समान रूप से व्यापक तत्व है। इसलिए मानव समाज में इसे मानवता कहा जा सकता है। वेदांत में प्रकृति में भी यही एकात्मक तत्व माना गया है जो मनुष्य में है। इस प्रकृति दर्शन से मनुष्य और प्रकृति का समन्वय होता है।

वेदांत को जितना मानवतावादी कहा जा सकता है, उतना ही प्रकृतिवादी भी कहा जा सकता है और उतना ही ईश्वरवादी भी कहा जा सकता है क्योंकि उपनिषदों के अनुसार मानव प्रकृति और ईश्वर में एक ही तत्व विद्यमान है। वही हमारे चिंतन का आधार होना चाहिए। यही तत्व सच्चिदानंद है। वेदांत के अनुसार परम तत्व ब्रह्म है। ब्रह्म ही सत्य है। वह अनंत नित्य, सर्वव्यापी और शुद्ध चेतन्य है। वह सब की आत्मा है अर्थात वह तब मानव में उपस्थित मानव तत्व है। वह संसार के समस्त पदार्थों का आधार, परंतु सूक्ष्म तत्व है। वह जगत का आदि अंत और स्थिति है। प्रकृति में उसी की शक्तियां काम करती है। तैत्तरीय उपनिषद के शब्दों में "उसी से सब मृत प्राणी जन्म लेते हैं। उसी में वे जीते हैं और उसी में समा जाते हैं।" मानववादी दृष्टिकोण से ब्रह्म की सबसे अधिक महत्वपूर्ण व्याख्या सच्चिदानंद है। वेदांत में ब्रह्म को सच्चिदानंद कहा गया है। ब्रह्म सत भी है और चिद् भी है अर्थात जहां कहीं अस्तित्व है, वहां ब्रह्म है और जहां कहीं चेतना है, वहां ब्रह्म है। इस प्रकार ब्रह्म आनंद का अर्थ सुख नहीं है, बल्कि स्वभाव है इसलिए वेदांत में ब्रह्म को सब प्रकार के वेदों से परे माना गया है। सभी वेद व्यावहारिक होते हैं। ब्रह्म से भेद से अंतर नहीं होता बल्कि परस्पर पूरकता बढ़ती है।

समस्या कथन

"वेदान्त दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

समस्या का औचित्य व प्रासंगिकता

वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया बदलते परिवेश एवं पाश्चात्य प्रभाव के कारण मानवतावादी दृष्टिकोण से पृथक होती जा रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि मानव परिवार और राष्ट्र, राष्ट्र और मानवता तथा अंत में मानवता और प्रकृति के कल्याण में परस्पर पूरक बने है। अतः मनुष्य का समस्त ज्ञान विज्ञान उसका समस्त दर्शन, विश्व का ऐसा रूप उपस्थित करने का प्रयास है जो हमारे मूल्यों की प्राप्ति में सबसे अधिक सहायक है। इस हेतु वेदांत दर्शन में निहित

मानवतावादी दृष्टिकोण का अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है। यही प्रस्तावित शोध का औचित्य एवं प्रासंगिकता है।

पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

मानवतावादी:- मानव कल्याण और सामाजिक सुधार को बढ़ावा देना।

सामाजिक न्याय:- समाज के हर वर्ग को समान अवसर मिले। जीवन की मौलिक जरूरत से कोई वंचित न रहे।

मानव कल्याण:- पूर्ण रूप से दुखों का नाश तथा परमानन्द का नित्य अनुभव।

एकात्मकता: - एकात्मक होने की अवस्था।

जीवात्मा:- जीव, प्राणियों में रहने वाली आत्मा।

परमात्मा: - परमब्रह्म, ईश्वर।

शोध क्षेत्र का परिसीमन

प्रस्तुत शोध को वेदान्त दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन तक सीमित किया गया है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में वेदांत दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण के अंतर्गत मानवतावादी प्राचीन परंपरा, उपनिषदों में मानवतावाद, भागवद् गीता में मानवतावाद, दार्शनिक संप्रदायों में मानवतावाद, शिक्षा का मानवीकरण, मानववाद के आयाम, प्रकृतिवादी मानववाद, मानववाद का महत्व, मानववादी शैक्षिक संकल्पना, वेदान्त और मानववाद का संबंध, का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध का उद्देश्य रहा है।

शोध विधि:-

प्रस्तुत शोध में दार्शनिक विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध निष्कर्ष

वेदान्त दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने से इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि वेदान्त दर्शन में निहित मानवतावाद का लक्ष्य मानव कल्याण है तथा संपूर्ण विश्व एक सत्ता है तथा उसी को ब्रह्म

कहते हैं। वह सत्ता जब विश्व के मूल में प्रकट होती है तो उसे ईश्वर कहा जाता है। वहीं सत्ता जब इस लघु विश्व अर्थात् शरीर के मूल में प्रकट होती है तो आत्मा कहलाती है। वेदान्त के अनुसार ईश्वर व्यष्टियों की समिष्ट है और साथ ही वह एक व्यष्टि भी है। मनुष्य के लिए वांछनीय सद्गुण देशकाल के अनुसार बदलते रहते हैं। मुक्ति प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होने के लिए मनुष्य को सदाचरण का पालन करना ही होगा। इस प्रकार वेदान्त का मानना है कि मनुष्य संसार के अन्य मनुष्य से पृथक् जीव नहीं है, बल्कि वह विश्वचेतना का ही एक एक अंग है। इसलिए उसकी पूरी क्षमताओं का प्रयोग विश्व कल्याण के लिए किया जाना चाहिए तभी मनुष्य का जीवन सार्थक माना जाएगा। अतः वर्तमान में वेदान्त दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण को स्वीकार करने की आवश्यकता महसूस की जाती रही है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध वेदान्त दर्शन में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, इसके अतिरिक्त वेदान्त दर्शन की सामाजिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है तथा वेदान्त दर्शन के धार्मिक दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओड. लक्ष्मी लाल के : शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (1988)
2. उपाध्याय. प्रो. बलदेव : भारतीय दर्शन, शारदा, मन्दिर, वाराणसी (1960)
3. भटनागर, सुरेश :- भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ|
4. सक्सेना . लक्ष्मी :- समकालीन भारतीय दर्शन, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ (1974)
5. कृष्णन् सर्वपल्ली. एस. डी. राधा :- भारतीय दर्शन भाग - 2, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली
6. अपूर्वानन्द स्वामी : आचार्य शंकर, रामकृष्ण मठ, धन्तोली, नागपुर (1970)
7. उपाध्याय गंगा प्रसादः अद्वैतवाद, कला प्रेम, प्रयाग (1957)